

२८
 कप्ररत्नो न
 प्रश्नरत्नविधि
 ॥२२॥

श्रीमद्भगवद्गीता
 3149

३११॥३

२९

कवचविनायक
सुखसुखविधि
॥२२॥

श्रीगुरुदेव

३१११

[illegible]

किदिगुयालग (६६) दिवलि॥
 मथसं कल्यादि॥ ॥ अंमाला
 साधनी ॥ अं अं १३ ॥ कं रं ३४ ॥
 ॐ मालमहाल सर्वगतसुखि
 लावतुर्वर्गलया न्यसु नस्मान्
 सिद्धिदाहवशा ॐ लायेनमः ॥ पू
 जामिति ॥ लं मालसर्वदानीस
 वसिद्धिदायव ननसलेनम
 सिद्धिदहिमाग न्नभासुन ॥ ॐ नि
 सुत्वाजयन्कविश्व ॥
 हामविधिमालकावसय ॥
 ॐ नानसंन व वृवसंन व वा
 या कल न न या व ॐ वृव व मू
 लनथवमालका पूजायाय ॥
 ॐ अद्यादिसूर्याय गुन नमस्का
 न्यासाय वासु पूजा ॥ आत्मपू
 जा ॥ कृणुवतु ४ संस्कार ॥ मूलन
 निशीकृती ॥ ५ ॥ अस्याय रुद्रा
 उनी ॥ ६ ॥ कवचाय ६ ॥ अत्रगुण
 नी ॥ ७ ॥ धनमूलाय ७ ॥ नीकवर्ण
 ॥ कृणुपूजनी ॥ मूलमनुयउवा
 व ॐ कृणुयनमः ॥ पूव्वान
 स कृणुसायलाय ॥ पूजनी ॥ ॐ

मृकृणुयनमः ॥ ॐ नन्दवन
 मः ॥ ॐ पूनन्दवायनमः ॥ ॐ रु
 नदावागस कृणुसयलाय ॥ पू
 जनी ॥ ॐ वृद्धा नमः ॥ ॐ वेव
 सताय २ ॥ ॐ नन्दवनमः ॥
 कृणुसयनवासनवाय ॥ वृद्धा
 वृद्धा निका वृद्धनयि श्रुद्ध
 लयनधनयि वृद्धवस वृद्ध
 नधयायथसमूलमनुगण
 ॐ लि ॥ पूजनी ॥ कर्त्तिकासन ॥
 आधननकल्यादि ॥ सी वृद्ध ॥
 अन्नादिका वस ॥ ॐ धम्मयिन
 मः ॥ ॐ नानायनमः ॥ ॐ वेवा
 न्नायनमः ॥ ॐ वेव्यायिनम
 ॥ पूव्वदिदिगस ॥ अधम्मयिन
 मः ॥ ॐ अन्नायनमः ॥ ॐ अ
 वेवान्नायनमः ॥ ॐ अनेव्या
 यनमः ॥ मध्मस ॥ ॐ अन्नका
 यनमः ॥ ॐ यद्यायनमः ॥ अं अ
 कर्मलुलाय द्वादहा कलात्मन
 नमः ॥ ॐ साममलुलाय वाउ
 हा कलात्मन नमः ॥ मं वक्रिमः
 लुलाय दहा कलात्मन नमः ॥

कलत्रम॥ ॐ योनाये नमः ॥ ॐ
 धर्मार्थे नमः ॥ ॐ अन्नार्थे नमः
 म॥ ॐ कलत्रार्थे नमः ॥ ॐ धूम्रार्थे
 नमः ॥ ॐ गोवार्थे नमः ॥ ॐ
 सुलिङ्गार्थे नमः ॥ ॐ अग्निवार्थे
 नमः ॥ ॐ कालिने नमः ॥ ॐ धन
 पूजादिन पूजा ॥ म॥ ॐ
 वं वक्रासनाय नमः ॥ कलत्रावागी
 ध्वनीध्वनी ॥ ॐ वागीध्वनी मृगु
 स्नामी नीलदीवसनिरीवा
 गीध्वनिसंयुक्तामिनिध्वना
 यपूजयन् ॥ ॐ वागीध्वनाः
 यनमः ॥ ॐ वागीध्वन्यो नमः
 म॥ ॐ धर्मार्थे नमः ॥ ॐ धन
 सिद्धिस्तुत्यादि नमः ॥ ॐ धन
 यद्वादिधर्मसंयुक्तं नमः ॥ ॐ धन
 याव॥ कलत्रादीनां लक्षणं ॥ ॐ
 रुद्रधर्मस्तु कलत्रादीनां लक्षणं
 लक्षणं ॥ कलत्रादीनां लक्षणं
 स्नाय ॥ ॐ दध्याग्निर्वेदवाग्नि
 होमाग्निध्वनस्तुतिर्नमस्तुति
 स्नाययादावपूजनी ॥ नमस्तुतिर्वे
 दार्थं कलत्रायामि ॥ धनमग्निः

सवेन नय नया व॥ ॐ कलत्रादि
 जयनय ॥ धनमग्निमग्निमग्नि
 नदी ॥ ॐ रुद्रधर्मस्तु कलत्रादीनां
 ॥ ॐ धनमग्निमग्निमग्निमग्नि
 पूजा ॥ नमस्तुतिर्वेदवाग्नि
 म्नि कलत्रादीनां लक्षणं ॥ ॐ धन
 यानव्याव॥ ॐ कलत्रादीनां लक्षणं
 यनयाय ॥ ॐ धनमग्निमग्निमग्नि
 आत्मसंयुक्तं नमस्तुतिर्वेदवाग्नि
 नय ॥ ॐ कलत्रादीनां लक्षणं
 गीध्वनीर्नमस्तुतिर्वेदवाग्नि
 मन्त्रविया ॥ कलत्रादीनां लक्षणं
 यादावमृगुनकाविसंयुक्ता
 याय ॥ वागीध्वनी मृगुस्नामी नी
 लदीवसनिरीवागीध्वनिसंयुक्ता
 यन् ॥ ॐ धनमग्निमग्निमग्निमग्नि
 मलहनरुद्रधर्मस्तु कलत्रादीनां
 लक्षणं ॥ ॐ धनमग्निमग्निमग्नि
 यक ॥ ॐ कलत्रादीनां लक्षणं
 अग्निध्वनिलक्षणं नमस्तुतिर्वेदवाग्नि
 दीदृगासनी सुवर्णवर्णमग्नि
 लसमिद्धविश्वनामग्नि ॥ ॐ धन

हृदि धोत्रय नैव वारं रुमा क
ल्यं यद्वा सैलं विनर्तुं ध्यायद्वा
वदमोर्लिङ्गं हरिः ॥ ध्युलिनः
अग्निध्यानया दाव आवाहनया
य ॥ याद्यादिगन्धादिनयूजा ॥ ध्य
मनुष्य ॥ ॐ वेदं न न जान वदं
हावलाहलादिना कसर्वकर्माः
सि साधय २ साहाय्यं दया दयाः
द्यैव दूय नमः ॥ ध्य ध्य ध्य ध्य
यानयूजा ॥ मखला सयूजा ॥ ॐ
वामाये नमः ॥ ॐ ध्य ध्य ध्य ध्य
॥ ॐ नो ध्ये नमः ॥ ॐ अग्नि काये
नमः ॥ दथ स वा द ध्य ध्य ध्य ध्य
सनयूदिन ध्याये नमः ॥ यनयू
गगनाये नमः ॥ गनयूत्र काये
नमः ॥ वनयू क काये नमः ॥
लनयू सुय साये नमः ॥ वनयू
वदू नू याये नमः ॥ यनयू अग्नि
त्रिकाये ॥ अग्नि लोका न नैम
ह्य वा य श का ग स अय सयि व
दिगम ॥ ॐ सह सा ध्यि ध्य द्य या
य नमः ॥ यादि य उ द्ग यूजा ॥
वद्वि मूर्ति ग कि स कि क यूजा ॥

धवदिग स ० न्यादि यूजा ॥
हस्त न ध्य क ध्य व का या व अग्निः
सयान ॥ कृष्णानया ल न हान
ध्य क ध्य व या वा या ल दथ स धि
ला म वि ला म न थि य ॥ ॐ कानन
॥ ज व दा स कृष्ण स न स न य ॥
न न ४ अग्नि काली सै सा न ॥ अग्नि
स सै मख न न य ॥ अग्नि मनुष्य
य ल या व ली ख न दा या ध्य ल न
य ॥ वदु ४ सै सा न ॥ वा य वा स
अग्नि न का य ॥ नम मनुष्य ध्य ल
सथ दा व अग्नि सै न य ॥ कृष्ण न
पूया दा व ध्य ल क दा व अग्नि सै
न य ॥ नम ४ अग्नि काली अग्नि सय्या
दा कृष्ण न यून ध्य ल स वा थ य ॥
कृष्ण अग्नि सै दू य ॥ रुद्र मनुष्य
ध्य ल न वला कृष्ण अग्नि सय्या दा
व ध्य ल क दा व अग्नि सै दू य ॥ य
न ४ अग्नि न ध्य ल का या व अग्नि
सदू य ॥ ली ख सा य ॥ ज व ला हा
न वा स ख व ला हा न या फाला व
ला वा का कृष्ण का व वा ला का ला
कि हा क कृष्ण न यूजा दा व रुद्र म

लुनसुधयविशी कवरी ॥ नमः
 मलुनआत्मसंमुखयाय ॥ थय
 कसं प्रवर्नी ॥ धाला कालाक्षि लक
 कृष्णवक्त्रयन्त्रिक्त्रियावधलदः
 थूसनयावनरुगथय ॥ शुक्रय
 कृष्णयकृष्णवयाय ॥ खव
 जनाजी कवयिङ्गलानाजी दथ
 सूष्मानाजी लावयाय ॥ नमः
 मलुनश्रवानजवसधलहुया
 वअग्नियाजवमिखासहामा ॥
 अग्नेय स्वाहा ॥ खवसं धलहुया
 वअग्नियाखवमिखासं हामा ॥
 ॐ सा मा य स्वाहा ॥ थय दधय
 सधलहुया वअग्नियाक्लासक
 मिखासहामा ॥ ॐ अग्नि सा मा ही
 स्वाहा नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ मलुन
 श्रवानजवमेरोसधलहुयाव
 अग्निया मुखसहामा ॥ ॐ अग्नेः
 य सृष्टि कृत्य स्वाहा ॥ समस्त
 संताग ॥ मलुनयाहनिहामा ॥
 ॐ रुद्र स्वाहा ॥ ॐ रुद्र स्वाहा ॥
 ॐ रुद्र स्वाहा ॥ मुखधमाद्रुमि ॥
 ॐ वेद्वाननजाकवदं लव

लाहिरुद्रय सवक माहि साध
 यरुखाहा ॥ विवर्नी ॥ नगा दहा
 कर्मा ॥ ॐ अग्नेर्गर्वाधनी सं याः
 दयामिखाहा ॥ वर्व कर्महा ॥ यथ
 वनी ॥ सीमकानयनी ॥ जारकर्म
 ॥ नाम कवर्षिष्टु दवयानामं क
 ला ॥ निष्कमनी ॥ रुलयासनी ॥ अ
 नयासनी ॥ चूजकवर्षी ॥ डवन
 यनी ॥ मलुवर्नी ॥ विवाहा ॥ डय
 निषट्टस्नानं गदानी ॥ डवाहा
 सी ॥ अग्नि या मा मववृज याय
 ॥ वागीध्वनवागीध्वनी सी नमः ॥
 विसर्जनी ॥ समिधवाहा कः
 धायालधलसवलावदय ॥
 रुक्मीश्वर्यानु ॥ धमाद्रुमि ॥
 ॐ स्वाहा ॥ ॐ श्री स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री
 स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री
 श्री ग्लो स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री श्री ग्लो
 स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री श्री ग्लो ग्लो
 यनय स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री श्री ग्लो
 ग्लो ग्लो यनय वनवनय स्वाहा
 ॥ ॐ श्री श्री श्री ग्लो ग्लो यनय
 वनवनय सर्वजन स्वाहा ॥

ॐ श्री गौरी नमः गणपतये
 वनवनदसर्वजनमवगमा
 नयस्वाहा॥ अग्निमयवयावा
 ० पूजायाया॥ अग्निमयवयावा
 आनयादावआवाहनयाया॥
 आवाहनस्वायनयश्चययाः
 नपूजा॥ अग्निमयवयावामुखस
 मूलमकुलनायदायालयम
 आदुति॥ अग्निमयवयावामुख
 सहितकुलिलवाययमूलम
 कुलजिमकुयालयनादुति॥ थ
 वदयाआवननदवयावमाकु
 यालकुयालयनादुतिविय॥
 अथआदुतिमयनसंख्याकाका
 आदुतिविय॥ वदनुयाजिकाः
 सा॥ धनलिआवननदवयावमाकु
~~आदुतिमयनसंख्याकाका~~
 यालकुयालयनादुतिविय॥
 नमआदुति॥ नमगनथ
 पृथिवीमहानवस्वाहा॥ ॐ वावा
 यवचानुक्रियायदिविमहान
 स्वाहा॥ ॐ स्वयंमसनककुला
 दिग्लामहानस्वाहा॥ गमाहामद
 यविरायविराययश्चवासनया
 वधलयपूजकनि॥ वावा॥ ॐ

३२

ॐ नमः पूजयावद्विधमादिना
 जायस्वप्रसूयवस्वासकमला
 मनसावाचादस्वासीयस्वामुद
 नहानिष्पद्यकर्मयददकर्मस
 र्ववकायहमसुखाहा॥ जावादि
 वयाकायया॥ सीतवमयानः
 दवनाआत्मसजाजलय॥ पूनः
 अग्निमयशाहनहामा॥ अग्नियाजि
 कानवठजनमूलिनकुयालयकु
 यालआदुतिविय॥ दयाआथः
 दमखलायासलीखनहायसीत
 वमयानअग्निविसर्जनयाया॥
 अर्घ्याजलनअग्निमयदक्षिण
 कला॥ यत्रिधीकृष्णअग्निमयय
 ॥ ~~अग्निमयवयावामुखस~~ वदहसनाः
 निलकीकला॥ गुनपूजादक्षिः
 धाविया॥ अरिधककाय॥
 ॐ नमः पूजयावद्विधमादिना
 ॥ ॥ ॥
 १ वलिमकु॥ अग्निनीरुनलीकलि
 कायादेकदवयावमयनालिखा
 दिवानकीवात्रियः ४ सवर्गमय
 नववलिनमः ४॥ नवमवदुलि
 कायदययनादिहीसगगिनः ४
 पूजद्विधवयावद्विधवागिशादि
 वानकीवात्रियः ४ सवर्गमयन
 ववलिनमः ४॥ मगगिनः ४ यवा

इन्द्राजपूतवसुधदुयय
वसामिथूननागिश्चसर्वरु
सुप्रवलिर्नमः॥यूनवसु
यादेकपूष्पाक्षयदवस्यक
कनागिश्चादिवानकवात्रि
८सर्वरुनसुप्रवलिर्नम
॥मघापूर्वरात्रुणीयादेक
दवस्य८सिंदुनागिश्चादिवा
नकवात्रि८सर्वरुनसुप्र
वलिर्नमः॥डलनरात्रु
णीयादुययदसुत्रिपूवर्द्धि
दवस्य८कन्यानागिश्चादिवा
नकवात्रि८सर्वरुनसुप्र
वलिर्नमः॥विजयैदस्त्रातिवि
शखयादुययदवस्यसुलाना
गिश्चादिवानकवात्रि८सर्व
रुनसुप्रवलिर्नमः॥विर्ग
खायादेकाननाधसुष्टदवः
रावृष्टिकनागिश्चादिवानक
वात्रि८सर्वरुनसुप्रवलि
र्नमः॥मूलपूर्वाषाढडलना
षाढयादेकदवस्यधननागि
श्चादिवानकवात्रि८सर्वरु

३३
नसुप्रवलिर्नमः॥डलना
षाढयादुययवनाधनसुष्ट
वर्द्धिदवस्यमकननागिश्चा
दिवानकवात्रि८सर्वरुन
सुप्रवलिर्नमः॥धनसुष्ट
नाष्टनरुष्टिषयूरुदयादुय
यदवस्य८कन्यानागिश्चादिवा
नकवात्रि८सर्वरुनसुप्र
वलिर्नमः॥मघापूर्वरात्रु
णीयादुययमगलायप्रव
लिर्नमः॥वृषारुलनास्थयाधि
यायगुकायप्रवलिर्नमः
॥मिथूनकन्यानास्थयाधिः
वृक्षायप्रवलिर्नमः॥कर्कट
नास्थधियायचन्द्रायप्रवलि
र्नमः॥सिंदुनास्थधियायसूर्य
यप्रवलिर्नमः॥धनस्मीनः
नास्थधियायवृहस्यमथप्रव
लिर्नमः॥मकनकन्यानास्थ
धियायगानिष्ठनायप्रवलि
र्नमः॥ज्वरादियचन्द्रायक
जायवृक्षायवृहस्यमथगुका
यगानिष्ठनायनादवकनय

एकं वलिं दद्यात् ॥ मीनं मय
थानननालं वववाववकीन
वने मिल वलिज विष्टिः क
निवहुष्य दकिं दुधस्य प्रथः
वलिन्तमः ॥ गगः कुरुकां द
वनीं संपूज्य सुखात्मानिथा
जयत् ॥ ॐ नमो वलिविधिः ॥

॥ ॥ ॥ ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ गगव
काः सुप्रतिष्ठा विधिर्लिख्यते
॥ श्रीं कीं कीं ॥ ॥ ॥ रुमिसाधनं
॥ ॥ अथ रुमगुष्टिः ॥ यादा
दियान् ययर्न पृथिवीस्त्वा
नं वहुवर्णं यीन वल्लुवका
दवर्गं नमः ॥ अर्चनीं वीजं ध्याः
यत् ॥ ऊर्यारि नारिय यर्न
आयस्कान् विधननाकानः
गुह्यवर्णं विष्टुदवर्गं नमः
॥ अर्चनीं वीजं ध्यायत् ॥ नाया
दिह दय ययर्न नजकाः
नं त्रिका गजक वल्लुवद
वर्गं नमः ॥ अर्चनीं वीजं ध्यायत्
॥ हृदयादिकं सुप्रयत्नं वाये

स्नानं वक्रां कुरु वल्लुमदः
॥ अथ दवर्गं नमः ॥ अर्चनीं वीजं ध्याः
यत् ॥ कलानललाटवयर्न
आकाशस्नानं सदागिव दवद
वर्गं धूमवर्णं वल्लुलाकारं नः
नमः ॥ अर्चनीं वीजं ध्यायत् ॥
गगाय एवमायामर्तुगदया
जिवमा कुरु वल्लुवर्णं ध्यायत्
॥ यर्न वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
॥ यर्न वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
नं ॥ लं वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
दं वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
मायावीजं नववर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
मा कुरु सवीन सवस्त्वन विधा
वयत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
कुरुवर्णं यर्न वल्लुवर्णं
जवाय आकाशं तन हृदया
यत् ॥ यर्न वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
जं यर्न वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
गन्धस्नानं सदागिव ॥ यर्न वल्लुवर्णं
कीं वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं
वर्णं वल्लुवर्णं ॥ यर्न वल्लुवर्णं

य वो षट् ॥ ओं ओं ओं नं थं दं
 धं नं नं शं नि या द वा यु व सु
 लन क व वा य दू ॥ ओं ओं ओं
 यं रं वं रं मं डं व व नां पि वि णः
 न्म न्दा ल न न न न या य व षट्
 ॥ ओं ओं ओं अं यं नं लं वं रं वं रं
 लं रं अं ४ लं कं वं वं धि न मां सः
 मं दा कि मं डां गु कं हि ना व द
 न द द य गु म्मा या द व वि न्य स
 न् ॥ ॥ अथ या न प नि षा ॥
 ॥ नि द्वा द हा धा या न प नि षा ॥
 ॥ अथ या न प नि षा म नु स्य व
 क्क वि क्क नि व म म यं हि न नि म
 म्म य ४ सा मा नि क्क न्यं सि म्म र व स
 क ल वं न न्या न्या न कि य नाः
 द व मा द द य ॥ ॥ अथ ध्मा न ॥
 न का म्मा धि क्क पा दा ल स द न्ग
 स मा जा धि नू र्ण व ना ड्वा न्ग
 द न्ग मि न्द्रु व म नि गु ण म न्य
 क ण यं व वा ण ॥ वि न्ग णं ध कः
 या लं नि न य न ल लि ना यी न वः
 का न्द्रु दा द्वा द वा ला कं व द्वा
 रु व रु रु रु क नी या न कि ४ यः

वा या शा द द या न्द्रु ओं ओं कि
 म धा ये न म शा न्द्रु ओं ओं व द्वा
 न म शा न्द्रु ओं ओं धे र्थे न म ४ ॥
 न्द्रु ओं ओं धे र्थे न म शा न्द्रु ओं ओं
 सि धे न म शा न्द्रु ओं ओं व द्वा न म ४
 ॥ न्द्रु ओं ओं म धे न म शा न्द्रु ओं ओं
 न्द्रु र्थे न म शा न्द्रु ओं ओं स न्धे
 न म शा न्द्रु ओं ओं ओं ओं यं नं लं
 वं रं वं रं लं रं रं सां अ म्म यः
 वा क्क म न न्द्रु र्थे न म शा न्द्रु ओं
 प्रा ण न्द्रु र्थे न म शा न्द्रु र्थे न म
 रु रु सा द्वा ॥ १० ॥ ॐ ॐ द द या य
 न म शा ॐ नं नि न स सा द्वा ॥ ॐ
 मां नि र्वा ये वा षट् ॥ ॐ रं क व वा
 य दू ॥ ॐ नं न न न या य व षट् ॥
 ॐ वं अ म्मा य रु द्वा ॐ नं द द ना
 य ॥ ॐ सं द द या ॥ ॐ कं वा द द्या
 ॥ ॐ ती जा न र्थी ॥ ॐ धं वा दः
 र्थी ॥ ॐ अं द द या य न म शा ॐ
 ॐ नि न स सा द्वा ॥ ॐ दं नि र्वा
 ये वो षट् ॥ ॐ नं क व वा य दू
 ॥ ॐ ओं नं न न न या य वा षट् ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 मातृगवतं सर्वकर्मणि ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 म॥ ॥ ॐ ॐ हृदयाय नमः ॥
 ॐ यत्रायतिवसखाहा ॥ ॐ
 यत्रवतिवसखाहा ॥ ॐ श्री
 लनननुयायवोषट् ॥ ॐ कः
 वचायट् ॥ ॐ यत्राययत्रखा
 लननम॥ ॐ श्रीनमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 रुमायश्रुतिश्रुत्यलक्ष्मीनिवा
 ससकलजगन्कारुणसर्वलक्ष्मी
 हृदयविद्यात्रैविमुक्तवनमदा
 नादकनसनासूत्रमनूजसूत्र
 श्रीजनमनीसिगाययशदीयय
 २सायय२मात्रय२सूरय२मा
 हय२दावय२श्रु कर्षय२सः
 मस्तयवमसूत्रसर्वसौभाग्य
 कनसर्वसर्वकामयदुनिर्ग
 हन२वक्रकगदायाखड्गस
 वधाहोरिन्द२वाहनकह२श्री
 कृष्णनगाउय२गुन२किनिष्ठः
 सिगावद्यावसमीदिर्गमसिद्धिः
 रुद्रावदूरुद्रनमः ॥ ध्यानं ॥

ह म न का ति रा द वी व लु का
 व लु वि क मा । का ल्या य ती म हा द
 वी दू र्ण दू र्ण ली ना सि नी ॥ सः
 व ली का न रु धी गी यो ना न न म य
 आ ध ना । दि श्य व रु ध ना द वी स
 व ल क ल स य ना । का ध नू य ध
 ना द वी वि न ना ना नू हा सि नी ॥
 जा ह ल्य न उ र्ण ना न म रु क
 ली ल न न्दि नी । र व ज वा ण न था ण
 कि जि गू ल व क द कि ण ॥ रु ला
 धृ त्वा क र्ण वा णी कू ष र्ण वा म क क
 न ॥ सि ह म दि ष मा नू र्ण म दि वा
 न न घा मि नी ॥ म हा द वी वि ना ण
 य स व र्ण दू र्ण य क ना ॥ नि धी
 न ॥ ॐ नै र्ण वा ज य द म हा दू र्ण
 व लु का ल्या य ती न म ॥ ॐ नै र्ण
 वी र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण
 य ती स्वा हा ॥ ॐ र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण
 अ य नि ह न ण क थ स व र्ण न म
 य य रु य नि वा न ण न म ॥ अ म
 न धा न ॥ ॥ नै र्ण वी र्ण र्ण र्ण र्ण
 र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नंदाधीशं श्रीं द्वाकाय नमः

मन्त्रः श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ ह्रीं क्लीं अं वल्लवं ह्रीं अं मंदः

सं० सा. ह. श्री गुरु क. द. शा. वा. द. न. ग.

कृष्णाय नमः ॥

विश्वं किमुखा हर्षा द्वा प्रो

दीर्घा ॥ यावयसिद्धा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

महादेव शंकर या ललाठी कृतः

मृगशीर्षादियानमस्तुः

० श्री डा डि या म्वा द वी श्री डा डि स

नाथद्वयानकाभादवीष्टीयाः

मजीगानन्दवशीककाजीमह

नात्रिकावृक्षधीकदमवृक्षधीः

दयमित्रियच्चमशीवदुकना

॥ कथं बालविद्युधी कृद्विजायः ॥
॥ विद्यामन्त्र न न न न न न न न न ॥

॥ इति श्रीवैष्णवसुन्दरीनन्दनाथप्रदः
पदकां ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यही मना माधवी श्रीसूगन्धक
जयालक्ष्मी श्रीनारायण गीजाल
मन्महा मन्मदायी ० श्रीजाला मा
धवी श्रीकृष्ण गानन्दधव श्री
कृष्णानी मन्मदायिका वृक्ष श्रीका
नन्द श्रीहिमगिरि यवर्ग श्रीय
मदलु कृष्ण यालय धवी कृष्ण
श्रीगिरि वासुक्तु नन्दनाथध
वयादकी ॥ ॥ नन्दनन्दनदीः
यकनदी धवी श्रीगन्धर्व लक्ष्मि
लक्ष्मी श्रीदायनय ० श्रीपूष्पमि
विमलामन्मदायी ० श्रीपूष्पमा
धवी श्रीपूष्पगानाथधव श्रीव
सुखा माधवी श्रीवकाशनाथ
धव श्रीकृष्णालि मन्मदायिका
नानिका वृक्ष श्रीविष्णुनी वृक्षः
श्रीभूतगिरि यवर्ग श्रीविमलक
जयालक्ष्मी श्रीकृष्णाय श्रीगि
रि वासुक्तु नन्दनाथधव याद
की ॥ ॥ नन्दनन्दनदीः श्रीनलदी यधु
माधवी श्रीमन्मदायिका यालय
श्रीकलिश ० श्रीकामनूपमदा
मन्मदायी ० श्रीकामवीजामाधवी

श्रीकामागनाथधव श्रीमन्मदाः
कृष्णामाधवी श्रीमन्मदायिका
नन्दधव श्रीकृष्णालि मन्मदायिका
वृक्ष श्रीविष्णु वृक्ष श्रीसामगिरि
यवर्ग वृक्ष यदलु कृष्ण यालय
नीम श्रीकृष्णाय श्रीगिरि वासुक्तु
नन्दनन्दनाथधव यादकी ॥
॥ नन्दनन्दनदीः श्रीनलदी यधु
माधवी श्रीमन्मदायिका यालय
श्रीकलिश ० श्रीकामनूपमदा
मन्मदायी ० श्रीकामवीजामाधवी
श्रीकामागनाथधव श्रीमन्मदाः
कृष्णामाधवी श्रीमन्मदायिका
नन्दधव श्रीकृष्णालि मन्मदायिका
वृक्ष श्रीविष्णु वृक्ष श्रीसामगिरि
यवर्ग वृक्ष यदलु कृष्ण यालय
नीम श्रीकृष्णाय श्रीगिरि वासुक्तु
नन्दनन्दनाथधव यादकी ॥
॥ नन्दनन्दनदीः श्रीनलदी यधु
माधवी श्रीमन्मदायिका यालय
श्रीकलिश ० श्रीकामनूपमदा
मन्मदायी ० श्रीकामवीजामाधवी
श्रीकामागनाथधव श्रीमन्मदाः
कृष्णामाधवी श्रीमन्मदायिका
नन्दधव श्रीकृष्णालि मन्मदायिका
वृक्ष श्रीविष्णु वृक्ष श्रीसामगिरि
यवर्ग वृक्ष यदलु कृष्ण यालय
नीम श्रीकृष्णाय श्रीगिरि वासुक्तु
नन्दनन्दनाथधव यादकी ॥
॥ नन्दनन्दनदीः श्रीनलदी यधु
माधवी श्रीमन्मदायिका यालय
श्रीकलिश ० श्रीकामनूपमदा
मन्मदायी ० श्रीकामवीजामाधवी

[illegible]

॥ ३ ॥ ॐ निवन्नाष्टुपनिष्ठाः
विधिः समाप्तः ॥  ॥
अथ ग्रन्थसंग्रहः ॥ अथादि
वाक्यश्रुतिः ॥ कथवादिवाक्य
प्रवा ॥ अमृक (ग) अमृक (ग)
मा अमृक (द) वगया अमृक (म)
नुसिद्धि का माय सादिवि मृक
यर्थार्थ ऊय संख्या न द धीमि
क्षम न द धीमि संख्या न द धीमि
समाज्जिन न द धीमि स्वायत्त लक्ष्मी
जन नृप यय नृप नृप नृप नृप नृप
थ ॥ ॐ निवन्नाष्टुपनिष्ठाः
विधिः ॥ ॥ वदुला दधी सदा
गहाय कड दय स ॥ अष्टुप
वावाहाल दधन या दड दय
सयमीव न दिना नृकु कालः
थ क द्दिना नृकु कालः
न क द्धमि अष्टुमीव न ड द
व स नाम न वमी ड द य य द्धि
सधमि दि न स धर्म ल नादि
समूह ल द्धि गुल साध क द्धि
द्धि सिधमि नादि समूह ल द्धि
मगुल साध न क द्धमि सैका

यादवका हाविशानकडद
यपुद्रिसकद्रुधनयद्रुः
यानवेवद्रुवगद्रुवनयाद
डदयअष्टीधमअसुसुलव
लियाकडदयदिसिधमअः
सुसुहुरयानअसुसुववद
सनाजियासुद्रुलनगुलसाध
कद्रुनाजिसुद्रुलद्रुमगुल
साहनकद्रुकनियामववद
सडदयहीउयधुयनियुजा
डदयअमावास्याज्ञानदानड
दयऊनमदिवसडदयवेण
खधुद्रुलद्रुयाननालायान
सादगवायानद्रुलायनिलाय
डदयअकयहमीयाडदय
सयुगादिउधनयायान
युल्लमिडदयसुविसुवाला
दुलिगिडदयअष्टगुद्रुय
छिडदयसुगिधिनखानुद
सहनादिगिडदययननिया
नववदसडदयसुअष्टकः
कमलरुदयानअष्टिअष्ट
कसआषाढगुद्रुसयनदा

यादवका हाविशानकडद
यसपुद्रिसिकद्रुधनयद्रुः
कद्रुयानवेवद्रुवगद्रुवन
नयादडदयसुअष्टीधमः
अष्टसुलवलियायानडदय
सुदिसिधमअष्टसुहुरयानः
अष्टसुववदगनाजियासुद्रु
लनगुलसाधकद्रुनाजिसु
द्रुलद्रुमगुलसाहनकद्रुः
कनियामववदगडदयही
उयधुयनियुजाडदयअमा
वास्याज्ञानदानडदयऊन
मदिवसडदयवेणखधुद्रुल
द्रुयाननालंयानसादग
वायानद्रुलायनिलायडदय
अकयहमीयाडदयसयुग
दिअष्टधनयायानयुल्लमाः
उधेयसुविसुवालादुलिगि
दहीडदयसुगुलगीथया॥
आषाढकद्रुयधुलकद्रुवगुद
गीनाजिसुद्रुलद्रुगुलसाध
कद्रुमगुलसाहनकद्रुध
वगधुलअष्टिडदयसुयन

यं जाया न पुनिका रुदिथाः
काय द्वादशी ड द य स पुनिल
न न पुनिका रुदिथ इ ल व व द स
थ इ ल व व द न न रु ल ल ल व
या या स का या य द्दि लि न न स
व द या ड या क म पुनिका सि न
लि व व द न न रु ल ल सा य व
मी क द्दि इ ल ड य वा न न य ल
दि सी य व मी क द्दि न न य इ व
दि या ड या क म व व द क क
या सा या द ड द य क क रु मी
अ रु स रु था द लि ड द य स य
गा दि व द या न ग क रु मी
वा सा ड द य स रु द य द रु क
ह वि ना नी व न रु मी या ड द य स
य न्द ना क वा था क अ रु स का क
यं व मी ड द य स का य जा वि य
म न वि ना य क स ध म व न जा
न व वी ड द य स म ल ल रु
व न या व न जा न अ रु ड द य
का य ल या न म ल वी था य क
का द वी ड द य स न्द व वा य
थ या न द रु क रु या न या वा

य अ न न व न व रु द वी ड द
य स व रु द वी रु न रु ल सा य
व मी क द्दि ध म रु था द वी व रु
द वी स था ग स म न व व व मी
न व रु द य द क क रु म क
मि ला क ध म ड द य स म ल ल
श्री व न अ रु ना री

१ मातृद्विनमस्तु वृक्ष
नृपधननय। कृपया हन
विद्युमस्तु सिद्धिं ययकु
म॥ ॥ मरुगिवनदयवि
पनमानन्यवृषिणि कृपः
याहनविद्युमस्तु सिद्धिं
ययकुम॥ ॥ कीमानिसेव
विद्युगि कमानकी० नवन
कृपयाहनविद्युमस्तु सि
द्धिं ययकुम॥ ॥ विद्युनृप
धनदयवि विनतासूतवाहि
नि। कृपयाहनविद्युमस्तु
सिद्धिं ययकुम॥ ॥ वाग्रा
हिन्ननदयवि। दुष्काहनव
सन्धन। कृपयाहनविद्युम
स्तु सिद्धिं ययकुम॥ ॥
गकनृपधनदयवि गकादि
सूत्रयूक्ति। कृपयाहनवि
द्युमस्तु सिद्धिं ययकुम॥
॥ यामु० म० मातासृकः
वर्चिताविद्युनासिति। कृप
याहनविद्युमस्तु सिद्धिं

ययकुम॥ ॥ माहात्म्यं म
हाभाक् कोरुसंतापनासिति
कृपयाहनविद्युमस्तु सिद्धिं
ययकुम॥ ॥ मितिमाहमय
दयवि मितिमाहवहि कृताः
॥ कवकदयवि विद्युनृः
पनमाहुत॥ ॥ ॥ तस्यैव
॥ यमु मस्तु नृपसंज्ञतः
विदग्धनायमाता कृताः
विद्युनृगायत॥ ॥ यदिही
जायनातासु शान्तयमृता
द्विष्टास्तु तं पृथक्वाव
यावहकिं नगायत। कोन
ममखवासादि ताम्बूलवः
निवदयत॥ ॥ ॥
॥ ततावहकमेकं वदुमाथ
ग्रीवकाखयग्री० ॥ यांथागि
विद्युस्वाहा॥ सकनथागिनि
शाचकं ग्रीवकनेमतमहा
गद्यतिमस्तु महागद्यतिना
थग्री० ॥ ग्रीवकवायवा॥ कौ
क्यानाय० कौक्यनाथग्री० ॥

श्रीचक्रं ॐ नमः ॥ सर्वानन्दः
मयवेन्दवयववक्रस्वपुषिः
निपत्रमासुतगकि सर्ववक्र
श्वनि सर्वयक्तुश्वनी सर्वज्ञ
नश्वनी सर्वधाराश्वनी सर्व
यीथश्वनी जगदत्यलिमोह
का ससिद्धय समुद्रा सार्वका
नसहाहना सयविवाजा सधा
पवाने संवृतिता सतथिता सख
स्वाहा ॥ ॥ यनः युगा समर्थया
मि ॥ ॥ अथ पञ्चमं चिकित्सा
मूलद्वीपं युष्म ॥ पूर्वदक्षि
ध पश्चिम उक्तं कथयता यू
गा ॥ मूलमूत्राश्च महाकाशश्च
त्री वृन्दमंदिता सनसंस्क्रिता
सर्वसोलाग्न संस्क्रिता सर्वसो
लाग्नजननित्री ॥ ॐ श्रीं श्रीं ॐ
कीर्तं सः सा रं स्वाहा ॥ महाका
शनी वृत्त्यादि ॥ ॐ महाकाश
नी वृत्त्यादि ॥ सर्वकासविद्या
नेकीं श्रीं ॐ हं समहाकाशश्च
नी वृत्त्यादिनेकीं श्रीं समस्तमा

ह कामूर्चार्थमहाकाशश्चत्री
वृत्त्यादि ॥ ॐ तिर्यचकासविद्या
॥ मू मूर्चार्थमहाकल्यलतावृ
त्त्यादि ॥ ॐ श्रीं श्रीं हं समु ॥ ॐ स
नस्वति ॥ महाकल्यश्वनी वृत्त्या
दि ॥ ॐ श्रीं श्रीं महाकल्यश्वनी
वृत्त्यादि ॥ ॐ तिर्यचकल्यलता ॥
मू मूर्चार्थमहालक्ष्मीश्वनी वृत्त्या
दि ॥ ॐ श्रीं श्रीं कमलयुक्तम
लालयुवासी दयसी दक्षीं श्रीं
महालक्ष्मीनमामहालक्ष्मीश्वनी वृ
त्त्यादि ॥ श्रीं श्रीं महालक्ष्मी वृत्त्या
दि ॥ ॐ सः महालक्ष्मी वृत्त्यादि ॥
ॐ तिर्यचमहालक्ष्मीविद्या ॥ मू
मूर्चार्थमहालक्ष्मीश्वनी वृत्त्यादि
ॐ श्रीं श्रीं नमो गवती माहश्च
त्री मूत्रयुष्म स्वाहा ॥ महालक्ष्मी
श्वनी वृत्त्यादि ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं
श्रीं नमो गवती माहश्च श्वनी
सर्वजनमनाह नि सर्वनाहवर्ष
कनी सर्वमुखजिनी सर्वश्री
मुखवसकनी सर्वदृष्टवसंकवि
सर्वलाकवसंकनी श्रीं श्रीं नमः

नैरुद्रलिङ्गम् ॥ २ ॥

नैतन्धनी वृत्त्यादि ॥ ३ ॥ महा नलधनी वृत्त्यादि ॥ ४ ॥ नैतन्धनी वृत्त्यादि ॥ ५ ॥
लाह मूखि २ ॥ नूध नूधिन्यो ॥ १ ॥ माह माहि २ ॥ सुसुसुसुसु ॥ २ ॥ महा नलधनी वृत्त्यादि
०० ति महा नलविद्या ॥ मू मूवाय मूहा काम दधधनी वृत्त्यादि ॥ ४ ॥ सी सी विनी दू सी वया धर्मः
किं किं कू नू स्वाहा महा काम दधधनी वृत्त्यादि ॥ ५ ॥ वद २ वाग्वादिनी कुं की न कुदि नि महा धर्मः
कू नू २ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

यस्य वा नि ॥ वशी लक्ष्मि मर्त्ये यत्र पतिरु विष्णो धन न भो दि वा मा न र्थेष्वा च न ए क म ल क्ष्मि न नि
न न १ य न न क र्म न ए न नि ध व न वि भा द न च म र्म क र्म ल क्ष्मि स म्प क स न र न स म न १ दि नि न ल
००० द क्ष्मि र्मा न स क व म न स म क न ए र प स व नु पा र्थी या दा न्द्र र य न ले धु र्मा वि धि य न ॥ नि १ भ क्ति वा
यु ज्ञा स म य म धि वा यो धु य ० नि य ल प स स्या पि य स न ति क वि वा मृ न न स ॥ क र्म स मि क्षी वृ न्द न
म न स न नि ध र्म न ल व श स स्या क्षी णि य नि न पि क व न य नि नि धि १ ॥ वि य श का ना मा न क न य नि
व न को सि क ल या वि न र्जी व न्म क १ य रु व ति र्म क १ य नि र्म १ ॥ ॥ ००० नि म ल का ल क र्म
क र्म न क्ष्मि र्मा न क ॥ ॥

ए। यः सकर्तुमपि सर्वं कुरुवर्गं॥ अन्तर्गतं सवर्गं कुरुवर्गं गोष्ठीनिवर्तनविमर्शमा
 तः किमपि न हि जानन्ति यन्मयी। समागच्छामासीत् तद्विदित्वा दिव्यं वृत्तिं प्रसन्नमि
 त्वा नृपतिनसमस्तान् त्वनिनर्गं धनीश्रीकीर्त्तितं वृत्तिं नृपि समीपे गगनं त्वमकाकल्या
 णीनिदिशन्मयी कालि सकलं॥ मुनिः ८ कावमात्तं वेदवद्व्यासो गगनं कीर्त्तयन्नात्वं नृपा
 नं हवमन् नृपात्तं नृमन्॥ अमन् ८॥ सुष्मगलितं विदुः कथादि कथयत्तं यः सरुर्ज्वलं कर्तुं
 निरुगलितं वीर्यं न कुरुमी। कथयन् त्वत्तु कुरुमन्मयि तव व्याननिर्देशात् त्वं वागीश्वरं सर
 वणि धनेशीयनिवृत्तः॥ गुरुं सर्वं माईत्यादि गलितं वीर्यं हि कुरुमी समर्पय व्याकुरु विनोति

महोकाशी २

निगार्था कुरुदिना। समृद्धा अष्टनाम नृमयि सकलं कलिसर्गं गङ्गा नृपाया निदिदि यानि वृ
 त्तं सत्कलिवनः॥ वृत्तं यथा गोक्षु कुरुमन्धनं गोमन्दिनमथा यथा व्यायनं व्यायनं रुदिन
 यानि कुरु कुरु वमनी। स गव्यं प्रणीयति किं कवि त्यामुत्तरी नेदी नः॥ यथैकं यनमपेक्षणी
 नः॥ रुवति॥ इति यथा नृपी॥ १०॥ वनिवद्विदित्वा सवर्गं मलाकालनाश्चर्मदननसर्गो वः
 धनिने नर्ग। समागच्छन् कुरुवद्व्यासो गगनं त्वनिनर्गं कुरुमाच्छाद्य त्वं नृपति किं लसत्या
 स्मन्नरुनः॥ स आमाहि त्वं नृपलसमपि माई नमपि वा यन्मोर्वभर्षे न नमहि यथाश्च ग
 मपि वा वलितं कुरुगोष्ठीमपि विनलवर्गं नृकिं सिद्धिः॥ सर्वोद्यति यदमप्युवा

सर्ग १

वाभंजाभाभमभाकृणलादकि (१) श्रीविपार्श्व अयंमहाधनवदृकाधुक्नाशरुमीसीकहं
 वीधमभनसिकविगांसकुभाससक्तधर्माकीलाधर्मधनमगहर्षीआगिनामंछागमध॥
 धुनमश्रीकात्येनम॥ कथुर्नमधमायेस्त्रनयनकिरीसनृवाभादिदुर्कवीरुनर्न
 नभगहिदुनहनवधुहि॥ कर्नभरुपकिं। नवीगआनिपआनिचमखकृदोदुल्लसं
 वदाव॥ त्रकुर्नधमनाधननचिनचिसर्वसिद्धिगाना॥ १०॥ धनभंनृवाभमधुवरा
 यनिगगावीरुनभामहंलिहन्मन्मन्वचनारुद्रिगपतिरुनादाभमर्ककदाविनाकि
 लादातामधीर्धनदमयिचिर्नभाहयनृन्नाकीवृन्दचन्द्रकचूँउरुवनिसेम

३५

अक्षि २२

धु ४

लाभाभभवादाभंभा॥ १०॥ धनभंनृवाभमधु॥ धनभंनृवाभमधु॥ धनभंनृवाभमधु॥
 नगदिगलिनचिकर्लकालिकर्धकपनिधकाधनध्वनिभंअहिधुनमयिभंअरावैनय
 किंरुहकदन्तामुधनादयधनवदभदकि (१) धुकाभन॥ इर्धकांभकपार्नकनकमल
 नमुहिनमधुगगाध॥ सवे॥ कीदिदनीचिहगदद्याहभदकि (१) कालिकयाइह्येनना
 मयाननवमभुविरुर्वरावयन्मदर्थभमामशोकनरु॥ युकाठिनवदभंमसिदयभुः
 म्रकस्या॥ वन्मर्धंअकिदुर्कविधनगिलिर्नरुधैकड्यमर्लनादध्वंचपधनस्मिन्म
 विनयधरुदयंआरुपिवा॥ मातर्धंरुपांनस्मनरुमदिनरावयन्म॥ १०॥ इवदुर्धभलकी

